17 मुझे यह अच्छा नहीं लगता

आज शनिवार का दिन है। इस दिन हमारे स्कूल में बाल–सभा होती है। बाल–सभा में सभी कक्षाओं के बच्चे होते हैं। स्कूल के मैदान में बच्चों के सामने कुर्सियों पर हमारी अध्यापिकाएँ एवं अध्यापकगण बैठते हैं। बाल–सभा में आज हमारी सीमा मैडम ने कनिका से कक्षा–4 की परिवेश अध्ययन की पाठ्य–पुस्तक में पृष्ठ संख्या 12 पर **'मुझे यह अच्छा नहीं लगता'** नामक पाठ्यांश पढ़ने को कहा। कनिका ने पढ़ना शुरु किया–

"मीना और रितु स्टापू खेलकर घर लौट रही थीं। मेरे घर चलो न, मीना ने रितु को खींचते हुए कहा। तुम्हारे मामा तो घर पर नहीं होंगे? अगर वे हों, तो मैं तुम्हारे घर नहीं चलूँगी, रितु ने जवाब दिया। पर क्यों? मामा को तुम अच्छी लगती हो। वे कह रहे थे– अपनी सहेली रितु को घर लाना। मैं दोनों को खूब सारी चॉकलेट खिलाऊँगा। रितु ने मीना से अपना हाथ छुड़ाया और बोली– तुम्हारे मामा से मुझे डर लगता है। वे मेरा हाथ पकड़ते हैं, तो मुझे अच्छा नहीं लगता है। यह कहकर रितु अपने घर चली गई"।

सीमा मैडम – बच्चो, क्या तुम्हें भी कभी किसी का छूना बुरा लगा है?

अंजू – मैडम, जब रिक्शा वाले अंकल मुझे गोदी में लेकर रिक्शा में बिठाते हैं तो मुझे अच्छा नहीं लगता।

सीमा मैडम – क्या तुमने इस बारे में अपने माता–पिता से बात की है? यदि नहीं तो हम आज ही जाकर उनसे बात करेंगे।

राहुल – मैडम एक बार मेरे पड़ोस के भैया ने अकेले में ले जाकर मुझे गलत तरीके से छूने की कोशिश की। लेकिन मैं वहाँ से भाग गया।

सीमा मैडम – शाबाश राहुल। तुम्हारा शरीर सिर्फ तुम्हारा अपना है। यदि कोई भी तुम्हारे निजि अंगों को छूने की कोशिश करे तो तुम्हें बिलकुल नहीं डरना चाहिए और ये तीन काम करने चाहिए –

1. चिल्लाकर कहोगे – 'नहीं' **(No)**

2. उस स्थान से भाग जाओ।

3. अपने माता–पिता, दादा–दादी, नाना–नानी अथवा अध्यापिका को जाकर इस बारे में बताओ।

आओ हम मिलकर ये गतिविधियाँ करें–

गतिविधि 1

"नहीं," "मत करो" "मुझे यह पसंद नहीं है, मैं चिल्लाऊँगा"।

हमें कहना चाहिए – **नहीं! (No)!**

बिन्दुओं को मिलाओ और वाक्य को पूरा करो।

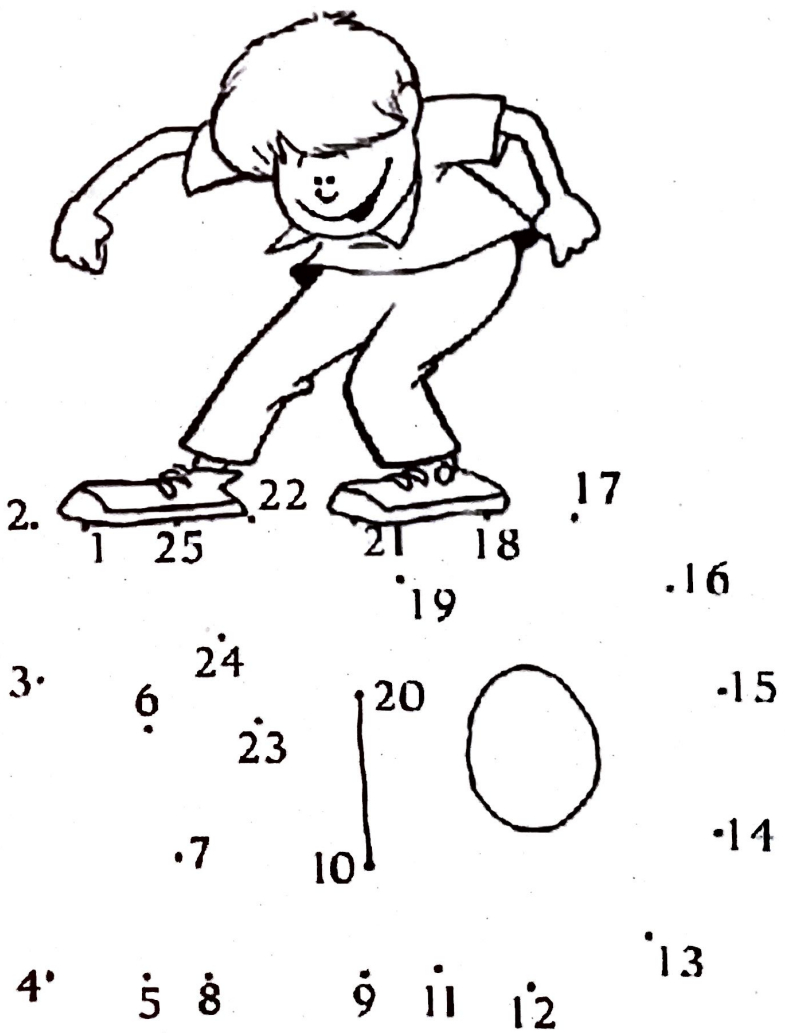

गतिविधि 2

हमारे आस–पास का घेरा, हमारा निजी घेरा है और यह केवल हमारा अपना है। यदि कोई हमारी सहमति के बिना हमारे निजि घेरे में प्रवेश करता है तो हम असहज महसूस करते हैं।

बिंदुओं को मिलाकर चित्र को पूरा करो–

गतिविधि 3

प्यारे बच्चो, क्या तुम जानते हो कि हम इस प्रकार की विकट स्थितियों से बाहर निकलकर अपने–आप को सुरक्षित रख सकते हैं। कुछ ऐसे फोन न0 हैं, जिन्हें तुम जानो तथा आवश्यकता पड़ने पर उनका प्रयोग करो।

आओ उन्हें लिखें–

महत्त्वपूर्ण फोन न0:

दादीजी – दादाजी	.....	नानीजी – नानाजी	.....
पड़ोसी 1.	.....	पडोसी 2.	.....
अंकल	.....	आँटी	.....
मम्मी	.....	पापा	.....
अध्यापिका/अध्यापक	.....	रिश्तेदार	.....

मेरा फोन न0 .....

आवश्यकता के समय हम किसे फोन करेंगे

पुलिस .....

अग्नि शमन विभाग .....

एम्बुलेंस .....

यदि कोई तुम्हें बोलकर या शारीरिक रूप से परेशान करे, धोंस जमाए, गलत तरीके से छूए या यौन शोषण करे तो ऐसी स्थिति में मुसीबत के समय जरूरत पड़ने पर हमें **1098** न0 पर फोन करना है।

गतिविधि 4

"नहीं चलेगा, नहीं चलेगा,
छूना–छाना, नहीं चलेगा।
हमको बिल्कुल नहीं है भाता,
छूना–छाना, नहीं चलेगा।

तुम कितने भी अच्छे हो पर,
छूना–छाना, नहीं चलेगा।
भइया हो या अंकल हो पर,
छूना–छाना, नहीं चलेगा।

हम अब नहीं डरेंगे तुमसे,
छूना–छाना, नहीं चलेगा।
कह देंगे अब जाकर सबसे,
छूना–छाना, नहीं चलेगा।

नहीं चलेगा, नहीं चलेगा,
छूना–छाना, नहीं चलेगा।"

अभ्यास

पाठ से

1. बाल सभा में अध्यापिका ने किस विषय पर चर्चा की ?
2. रितु नें मीना के घर जाने से मना क्यों किया ?
3. सताये जाने अथवा छेड़छाड़ की स्थिति में तुम किस फोन न0 पर संपर्क करोगे?
4. यदि कोई तुम्हारे निजि अंगों को छूने अथवा तुम्हें जबर्दस्ती पकड़ने की कोशिश करे तो तुम कौन से तीन कदम उठाओगे ?

आपकी समझ

1. शाम के समय घर के बाहर खेलने के लिए जाते समय, तुम अपनी सुरक्षा के लिए क्या सावधानियाँ बरतोगे ?
2. घर से स्कूल जाते समय दो रास्ते हैं – पहला, लंबा रास्ता–मुख्य सड़क जिस पर काफी लोग चल रहे हैं, दूसरा छोटा रास्ता – स्कूल के पीछे सुनसान पगडंडी का रास्ता ! तुम स्कूल जाने के लिए कौन सा रास्ता चुनोगे और क्यों ?
3. पाठ में तुमने रितु व मीना की बातचीत को पढ़ा। यदि तुम रितु के स्थान पर होते तो क्या करते ?

कुछ करने के लिए

यौन उत्पीड़न से सुरक्षा एवं बचाव के उपायों पर कुछ स्लोगन लिखो। उन्हें लकड़ी की तख्तियों पर चिपकाओ व अध्यापिका के मार्गदर्शन में रैली निकालो।

अध्यापक के लिए

समाचार पत्र/पत्रिकाओं व अन्य स्त्रोतों से यौन–उत्पीड़न संबंधी समाचारों की कतरने एकत्रित करो व उनके माध्यम से विद्यार्थियों को जागरूक करो। समाचारों का चयन बहुत सोच–समझकर करें। हमारा उद्देश्य बच्चों में इन घटनाओं के माध्यम से डर व असुरक्षा का भाव पैदा करना नहीं है अपितु उन्हें जागरूक, सावधान एवं सशक्त बनाना है।